International Research Journal of Management Science & Technology

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

कुरमाली लोकसाहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. उपेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक
कुरमाली विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।
E-mail Id : upendrakumar9905@gmail.com

सारांश :–

लोकसाहित्य किसी भी समाज का दर्पण होता है। लोकसाहित्य के अध्ययन के द्वारा सभ्यता, संस्कृति, धर्म, रीति–रिवाज, सामाजिक जागरण एवं आकांक्षाओं का सूक्ष्म अवलोकन करने में सहायक होता है। प्राचीन काल में सभ्य समाज की तुलना में अविकसित अथवा पिछड़ी कुरमी जातियों के पास मौखिक परम्परा में जीवित और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित लोककथाओं. लोकगीतों, पहेलियों और कहावतों की भरमार थी। शुरूआती दौर में विदेशी लेखकों की इन कुरमाली लोकसाहित्य पर नजर गयी तत्पश्चात् कुरमाली लेखक, इतिहासकार, साहित्यकार एवं बुद्धिजीवियों ने अपने–अपने तथ्यों पर अध्ययन किया और आज कुरमी जाति की गणना शिक्षित एवं सभ्य जातियों में की जा रही है। कुरमाली लोकसाहित्य में लोकगीत एक विद्या है। लोकगीतों के द्वारा हम किसी जाति के इतिहास, प्रथा एवं परम्पराओं की पौराणिकता का सहज ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। कुरमी जातियों के लोकगीतों में इनके परिभ्रमण का प्रमाण मिलता है। लोकगीतों के अनुसार कुरमी जाति रन–बन, बिजुबन, झाटी बन, बाधा बन, अरून बन, ये वनों (जंगल) में निवास करते थे। इन वनों (जंगलों) से कुरमी दूसरे जनजातियों से पहले निकले और पशु पालन अवस्था से कृषि अवस्था में प्रवेश किए। बाद में ये झारखण्ड, बिहार, बंगाल, उड़ीसा आदि जगहों में फैल गए। कुरमाली लोक–कथा भी कुरमाली लोक–साहित्य का स्तम्भ है। लोक कथा में सदाचार, सत्य निष्ठा, देवी–देवताओं, वृक्ष, पहाड़–पर्वत, पत्थर का पूजन आदि हमारी धार्मिक प्रवृत्ति का प्रतीक है। व्रत–त्यौहार तथा संस्कारों के पीछे भी यही भावना है। मानव जो भी काम करता है, उसके मूल में कहीं न कहीं धर्म का बीज छिपा रहता है। कुरमाली लोककथाओं, लोकगीतों, कहावथों, बुझौवल आदि का सुनने और पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि यह बेहद समृद्ध एवं अनुकरणीय है। इनमें साख्य, शांतिप्रियता, प्रकृति प्रेम, संगीतात्मकता आदि गुणों का चित्रण देखा जा सकता है।

भूमिका :–

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य एवं समाज का अविच्छिन्न संबंध होता है। समाज यदि शरीर है तो साहित्य उसकी आत्मा। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसका पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा आदि सब कुछ समाज में ही होता है। कुरमाली साहित्य में भी कुरमी समाज की छवि देखने को मिलती है। प्राचीनकाल के परिभ्रमण के इतिहास की कठिन प्रक्रिया का संवाहक है। यह सत्य है कि कुरमाली लोक साहित्य पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक साहित्य के रूप में हस्तांतरित होती रही। कुरमाली साहित्यकारों ने कुरमाली साहित्य को दो भागों में विभाजित किया है।

(क) लोक साहित्य (ख) शिष्ट साहित्य

लोकसाहित्य का तात्पर्य उस साहित्य से है जो मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक गाकर या सुनकर जीवित रखी गई है। समस्त कुरमाली इतिहास एवं परम्पराएँ इसी रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आयी है। कहानीकार एवं गीतकार मौखिक रूप में ही कहानी एवं लोकगीत सुनाया करते थे और लोकसाहित्य को जीवित रखे हैं। इस प्रकार से कह सकते हैं कि वास्तव में लोक–साहित्य लोक जीवन की

अभिव्यक्ति है। लोक साहित्य का लोक जीवन में घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। लोक साहित्य को अंग्रेजी में फोक लिटरेचर' का शाब्दिक अनुवाद माना है। विष्ट साहित्य वह साहित्य है जो लिखित रूप में उपलब्ध होता है। इसके रचयिता का नाम, पता आदि ज्ञात होता है। वर्तमान सांस्कृतिक परिस्थितियों के अध्ययन से हम कुरमाली संस्कृति को दो भागों में बांट सकते है, जिसे कुरमी समाज प्रभावित हो रही है।

(क) ग्रामीण संस्कृति

(ख) शहरी संस्कृति

आजकल भी कुरमाली ग्रामीण संस्कर्षत में लोक साहित्य की प्रधानता मिलती है। महीना के आधार पर पर्व–त्यौहारों को मनाया जाता है। प्रत्येक माह के गीतों के ताल, सुर, लय अलग–अलग होते है। राग के द्वारा ही गीतों के पार्थक्य और वैशिष्ट्य को समझा जा सकता है। यह मौलिक रूप में विद्यमान है। दूसरी ओर कुरमी जाति की बड़ी संख्या में जीविकोपार्जन के लिए नौकरी की तलाश में शहरों, महानगरों एवं दूसरे राज्यों में बसने लगी है। जिसे वे अपनी भाषा संस्कृति को भूलते जा रहे है औरा दूसरे भाषा–संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं। इस प्रकार से इनके अस्तित्त्व पर खतरा मंडराने लगा है। शहरों, महानगरों आदि में बसने के कारण अपने गाँवों को भूलने भी लगे हैं।

शोध विधि :–

शोध कार्य पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार के स्रोतों को अपनाया गया है। झारखण्ड राज्य के कुरमाली भाषी क्षेत्र को आधार मानकर इस अध्याय को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है, जिसमें राँची, हजारीबाग, बोकारो, धनबाद, गिरीडीह, पू० सिंहभूम, प० सिंहभूम, खरसावां आदि जिले आते हैं। सम्पूर्ण अध्ययन कुरमी जाति पर किया गया है। यह शोध आलेख प्राथमिक स्रोतों के साथ–साथ पुस्तकालयों के माध्यम से कुरमाली की मौलिक लोककथाओं, लोकगीतो, मिथों, आख्यानों, कहानी, बुझौवल आदि का संकलन किया गया है। साथ ही कार्य क्षेत्र में विभिन्न कुरमाली बहुसंख्यक गाँवों में ठहरकर काम करने का प्रयास किया गया है। साक्षात्कार विधि के द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उनके लोक–कहानी, लोक गीतों, लोक–कथाओं आदि संकलित करने का प्रयास किया गया है। अवलोकन विधि के द्वारा कुरमी जाति के रीति–रिवाज, परम्परा संस्कार आदि का तथ्यात्मकता को आंकने का प्रयास किया गया है।

तथ्य विश्लेषण :–

कुरमी जाति की अपनी भाषा और संस्कृति का स्वतंत्र अस्तित्त्व है। झारखण्ड प्रदेश में अधि धकांश भाषाओं का नामकरण जाति के आधार पर हुआ है। जैसे–मुण्डा से मुण्डारी, संताल से संताली, हो से हो, खड़िया से खड़िया, उराँव से उराँव या कुडुख तथा कुरमी से कुरमाली। इस प्रकार से झारखण्ड प्रदेश में भाषाओं के नाम स्थानवाची न होकर जाति या समुदाय सूचक है। झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों के पहाड़ियों, घाटियों तथा मैदानों में कई जातियाँ निवास करती है। कुरमी जाति के संबंध में कहा जाता है जनदे, जनदें नेदिक सोत, तनदें, तनदें कुरमीक जोत अर्थात् जिधर–जिधर नदी बहती है, उधर–उधर कुरमी लोगों का निवास स्थान है। कुरमी जाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है, जिसके कारण उक्त अध्ययन की औचित्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लोकोक्ति के द्वारा किसी भी जाति का क्षेत्र विस्तार का पता लगाया जा सकता है। जैसे कुरमाली के एक लोकोक्ति के द्वारा इसका विस्तार क्षेत्र का पता लगाया जा सकता है। कुरमाली की एक लोकोक्ति– उड़िश्य शिखर नागपुर, आधा–आधी खड़गपुर में इसकी सीमा रेखा की ओर इंगित किया गया है। अर्थात् उड़ीसा, छोटानागपुर, शिखरभूम तथा पश्चिम बंगाल के खड़गपुर तक इसकी सीमा का विस्तार है। वहीं दूसरी ओर कुरमी जाति के परिभ्रमण के विभिन्न जगहों का वर्णन लोकगीत में मिलता है। जैसे रन–बन, बीजु–बन, अरून–बन, बाधा बन और झांटी–बन आदि का लोकगीत में उल्लेख है।

सर्वप्रथम डॉ० जार्ज ग्रियर्सन ने "भारत का भाषा सर्वेक्षण" में बामड़ा की एक कुरमाली लोक–कथा को प्रस्तुत किया है। इसके पश्चात् डॉ० विश्वनाथ तथा डॉ० सुधाकर झा शास्त्री ने भाषाई सर्वेक्षण के क्रम में 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ दी सदर सबडीविजन ऑफ मानभूमि एण्ड धालभूमि" में पन्द्रह लोक–कथाओं को उद्धृत किया है। श्रीमती रेखा सिन्हा की "मानभूमेर लोक–साहित्य व शब्द–कोष" में कुरमाली भाषा की लघु

लोक कथाएँ मिलती है। इस प्रकार से कुरमी जाति का परिचय एवं इतिहास, लोक–कथा, लोकगीत एवं कुरमी जाति की विकास यात्रा का विस्तृत वर्णन है।

कुरमाली लोकगीत :–

महादेवी वर्मा ने गीत के संबंध में लिखी हैं– ''सुख–दुःख की भावावेशमयी अवस्था का विशेषकर गिने–चुने शब्दों में स्वरसाधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है।''[1] इस परिभाषा के तहत हम कह सकते हैं कि प्रत्येक मानव चाहे वह सभ्य हो अथवा असभ्य, शिक्षित हो अथवा अशिक्षित उसमें अपनी अनुभूति को व्यक्त करने की इच्छा और क्षमता निश्चित रूप से होती है। आदिम मानव भी स्वानुभूति से प्रेरित होकर उसकी रागात्मक प्रवृत्ति लयबद्ध होकर निकली होगी तभी गीत का रूप धारण हुआ होगा।

आदि मानव के हृदय से जो भावनाएं निसृत हुई होगी, वे ही आगे चलकर लोकगीतों के रूप में परिवर्तित हो गई होगी। यही भाव अभिव्यक्त होकर अंकित हो जाते हैं और वहाँ की मिट्टी बोलने लगती है, खेत–खलिहान गुनगुनाने लगते हैं, गलियारे, आंगन और अखाड़े नाच उठते हैं। ''इन गीतों के प्रारंभ के प्रति एक संभावना हमारे पास है, पर उसके अंत में कोई कल्पना नहीं। यह वह बड़ी धारा है जिसमें अनेक छोटी–मोटी धाराओं ने मिलकर उसे सागर की तरह गंभीर बना दिया है। सदियों के घात–प्रतिघातों ने उसमें आश्रय पाया है। मन की विभिन्न स्थितियों ने उसमें अपने मन के ताने–बाने बुने हैं। स्त्री–पुरुष ने थककर इसके माधुर्य में अपनी थकान मिटाई है। इसकी ध्वनि में बालक सोए है, जवानों में प्रेम मस्ती आई है, बूढ़ों ने मन बहलाये हैं, बैरागियों ने उपदेशों का पान कराया है, विरही युवकों ने मन की कसक मिटाई है, विधवाओं ने अपने एकांगी जीवन में रस पाया है, पथिकों ने थकावट दूर की है, किसानों ने अपने बड़े–बड़े खेत जोते हैं, मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाए हैं और मौजियो ने चुटकुले छोड़े हैं।''[2]

लोकगीत किसी व्यक्ति द्वारा रचित नहीं होते न ही यह जन–मानस की अज्ञात सृष्टि है। लोकगीत निरक्षर जन–समुदाय के बीच के ऐसे गीत हैं जो साहित्य के बंधनों से बिल्कुल मुक्त हैं। यह गीत मानव हृदय के स्वाभाविक उद्‌गार हैं जो गा कर व्यक्त किए जाते हैं। ये गीत शिष्ट साहित्य से अलग हटकर अपना अस्तित्व बनाए रखे हैं। यह गेय प्रधान होते हैं, लय के बिना लोकगीत अधूरा–सा होता है। इसमें रस, छंद एवं अलंकारों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है फिर भी इसमें परिनिष्ठित साहित्य से अधिक रस है।''[3]

कुरमाली लोकगीतों में विवाह, करम, वांदना, टुसू, उधवा, ढप, चांचर, डमकच, एढ़इआ, झूमर आदि आते हैं। संख्या की दृष्टि से वांदना करम, टुसु विवाह आदि के गीत भरे पड़े हुए हैं। ये गेय प्रधान होने के कारण पीढ़ी–दर–पीढ़ी लोक मानस के बीच गए जाते हैं। यह कभी निष्प्राण नहीं होते हैं। इसमें लोक–मानव के हृदय, संस्कृति और सभ्यता की सच्ची अभिव्यक्ति छिपी रहती है। प्रकृति–चित्रण के साथ–साथ सामाजिक व्यवहारों की पूर्ण अभिव्यक्ति भी हुई है। इन गीतों के भाव हृदय को छुए बिना नहीं रहते हैं। करूण, हास्य आदि रसों की प्रधानता भी इसमें रहती है।

कुरमाली लोकगीतों में जन–जीवन मुखरित हुआ है। कुरमाली लोकगीतों का जन–जीवन से निकट का संबंध है। इन लोकगीतों में जन–जीवन का प्रतिबिंब भी दिखाई पड़ता है। कुरमाली भाषी क्षेत्र के लोगों का प्रत्येक क्रिया–कलाप में लोकगीतों का महत्व है। कुरमाली लोकगीतों का मुख्य उद्देश्य लोक–जीवन में उल्लास के रस को अनुभूत करना रहा है। यह कहा जा सकता है कि कुरमाली लोकगीतों के कारण आज भी लौकिक–जीवन की परंपराएं कुरमाली भाषी क्षेत्र में जीवित है।

कुरमाली लोक–कथाएं :–

डॉ. विद्या चौहान के अनुसार– ''लोक भाषा के माध्यम से सामान्य लोक–जीवन में प्रचलित वैकालिक विश्वास, आस्था और परंपरा पर आधारित कथाएं लोक–कथा के अंतर्गत आता है। इससे मानव का पर्याप्त आमोद–प्रमोद होता है और आए दिन कथाएं लोककथा के अंतर्गत आती है।''

लोककथा की परिभाषा देते हुए डॉ. सत्येंद्र ने लिखा है– ''लोक में प्रचलित और परंपरा से चली आने वाली मूलतः मौखिक रूप में प्रचलित कहानी लोक–कहानियाँ कहलाती हैं।

डॉ. सत्या गुप्ता ने लोककथा की परिभाषा न देकर स्वरूप पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है– ''लोककथाओं में लोक–मानस की सब प्रकार की भावनाएं तथा जीवन–दर्शन समाहित है। भूत जानने की जिज्ञासा, घटनाओं का सूत्र सभी कुछ लोककथा में मिल जाते हैं।'' वास्तव में लोककथा की शास्त्रीय परिभाषा देना अत्यंत ही कठिन है।

कुरमाली भाषी क्षेत्र में कहानी कहने की परंपरा अत्यधिक पुरानी है जो आदिकाल से चली आ रही है कुरमाली लोक कथाओं में आदर्शवादिता का समन्वय स्वयं ही है हो गया है नीति और उपदेश के तत्व भी समाहित हैं कहानियों में चमत्कार प्रधान कल्पनिकता का प्रयोग भी हुआ है इसके अनेक संजीव उदाहरण मिलते हैं कुरमाली लोक कथाओं में चमत्कार, कल्पना की प्रधानता, विरत्व की भावना तथा यथार्थ के रूप में लोक की सहज अनुभूतियों का प्रकाशन हुआ है। कुरमाली लोक–कथाओं में यथार्थ और आदर्श का अद्‌भुत सामंजस्य देखने को मिलता है।

कुरमाली लोक नृत्य :–

कुरमी जाति में मौसम एवं पर्व के अनुसार लोक नृत्य का प्रचलन देखा जाता है। बारह महीना में तेरह पर्व कुरमी जाति में होता है। सामाजिक और सांस्कृतिक अवसरों पर स्त्री, पुरुष और बच्चे एकत्र होकर एक साथ नाचते और गाते हैं। ये अपने सार्वजनिक नृत्य स्थल को अखड़ा कहते हैं। नृत्य करते समय ढोल, नगाड़ा, करताल, ढाक आदि का प्रयोग किया जाता है। कुरमी जाति के संस्कृति का अध्ययन करने पर पाया जाता है कि अन्य जातियों के समान कुरमी जाति की संस्कृति न केवल अपने प्राकृतिक पर्यावरण से वरन् थोड़ा बहुत अपने मानवीय पर्यावरण से भी प्रभावित रही है और ये अपने हिन्दुओं पड़ोसियों के मर्म तथा संस्कृति के प्रभाव से बच नहीं पाये हैं। लोक नृत्य के अंतर्गत करम नृत्य, एढ़ेइआ नृत्य (पाँता नृत्य), ढप नृत्य, झुमर नृत्य आता है।

कुरमाली लोकनाट्य :–

लोकनाट्य लोकसाहित्य की वह विद्या है जो संवादों के माध्यम से किसी रोचक कथा प्रसंग को प्रस्तुत करके लोक का मनोरंजन करती है। लोकनाट्य शब्द लोक और नाट्य दो शब्दों से मिलकर बना है। इसे पाँचवा वेद भी कहा जाता है। डॉ. सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार– ''नाटक वह रचना है जो अभिनेताओं द्वारा खेले जाने के लिए लिखी गई हो। नाटक का व्यापक अर्थ है– ऐसा खेल जिसमें कुछ लोग किसी कथा के सामने उन पत्रों के समान आचरण करते हैं। यह अनुकरण या रूप धारण ही नाटक का प्रथम और मूल तत्व है।

कुरमाली लोक–संस्कृति में लोकनाट्य भी पाए जाते हैं, जो प्राचीन काल से चली आ रही है। कुरमाली भाषा में इसे 'छेइब' कहते हैं। कुरमाली लोकनाट्य के अंतर्गत नटुआ, छौ, डमकच और माछानी आता है। इसमें गीत, ताल और नृत्य का त्रिवेणी संगम है। जिसे कुरमाली भाषा के मनोरंजन का साधन बने हुए हैं।

कुरमाली कहावतें :–

लोकसाहित्य में लोकोक्तियाँ का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा किसी कथन में तीव्रता और प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। इससे भाषा में बल आ जाता है और यह श्रोताओं के हृदय पर अपना प्रभाव डालता है। लोकोक्तियाँ मनुष्यों के अनुभव सिद्ध ज्ञान की निधि है। मनुष्यों ने युग–युग से जिन तथ्यों का साक्षात्कार किया है उनका प्रकाशन इनके माध्यम से होता है। ये चिरकालीन अनुभूत ज्ञान के सूत्र होता है।

लोकोक्ति शब्द 'लोक' और 'युक्ति' दो शब्दों से मिलकर बना है। संस्कृत में लोकोक्ति के लिए अनेक शब्द प्रचलित हैं। यथा– कहावत, प्रवाद, लोकवाद, लौकिकी इत्यादि। लोकोक्ति जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, पहले बोलचाल की भाषा में बनती है। रूढ़ होती है, फिर वही अनेक बार अपनी लोकप्रियता के कारण साहित्य की भाषा में भी अपना आसन जमा लेती है, किंतु साहित्य में आते–आते लोकोक्ति को बहुत समय लग जाता है।''[5]

विभिन्न लोकभाषाओं की तरह कुरमाली में भी बहुतायत से लोकोक्तियाँ मिलती है लेकिन भाषा के अंतर के अतिरिक्त अर्थ प्रायः एक से ही होते हैं। भौगोलिक प्रभावों के कारण स्थानीय विशेषताएं भी मिलती

हैं। कुरमाली भाषा के कहावतों पर शोध कार्य डॉ. मनोरमा कुमारी ने की है जिनका शोध का विषय था 'कुरमाली लोकोक्तियों का अध्ययन।' इस शोध कार्य में कुरमाली कहावतों का संकलन किया गया है। इस पर और संकलन करने की जरूरत जान पड़ती है, क्योंकि दिनों–दिन कहावतें मानव–स्मृति से खत्म होते जा रहे हैं। कुरमाली कहावतों के संबंध में कहा जा सकता है कि कुरमाली कहावतें अवसर विशेष और घटना को देखकर ही कही जाती है। गीतों की तरह इनका कोई समय अथवा अवसर निश्चित नहीं होता। एकाएक किसी से कहावतें सुनाने को कहने पर वे नहीं सुना पाते।

कहावतों का क्षेत्र बड़ा व्यापक होता है और हर क्षेत्र में कहावतें सुनने को मिलती है। कुरमाली कहावतों में मानव जाति के मानसिक, सामाजिक, नैतिक, व्यवहारिक तथा प्राकृतिक संदर्भ समाहित है। धर्म और जीवन–दर्शन से संबंध रखने वाली ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने वाली, शकुन संबंधी, जातिगत चेतना से संबंधित, कृषि विषययक, वर्षा संबंधी, पेड़–पौधों से संबंधित आदि की कहावतें मिलती हैं। कुछ कहावतें दृष्टव्य हैं–

1- काम करबे अंग लागाइ, डहर चलबे संग लागाइ।

2- आघाल बकलि पंठि तिता।

3- आमें बान, तेंतेइरे टान।

4- नदी धारेक चास, मिछाइ करि आस।

कुरमाली मुहावरा :–

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है। अंग्रेजी में इसे 'इडियम' कहते हैं। इनके प्रयोग से भाषा सरस और सशक्त हो जाती है तथा भावाभिव्यक्ति में चमत्कार आ जाता है। दूसरे शब्दों में कहे तो ऐसा वाक्यांश जो समान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी भी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये मुहावरा कहलाता है।

पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने मुहावरा की परिभाषा देते हुए कहा है– 'मुहावरा किसी भाषा अथवा बोली में प्रयुक्त होने वाला वह वाक्य खंड है जो अपनी उपस्थिति से समस्त वाक्य को सबल, सहज, रोचक और चुस्त बना देता है। संसार में मनुष्य ने अपने लोक व्यवहार में जिन–जिन वस्तुओं और विचारों को बड़े कौतूहल से देखा है, समझा है, बार–बार उनका अनुभव किया है, उसको उसने शब्दों में बांध दिया है, उसको मुहावरा कहते हैं।''[6]

कुरमाली मुहावरे अपने मूल रूप में ही प्राप्त होते हैं। कुरमाली भाषा क्षेत्र के लोग लोक–मुहावरों का ही प्रयोग करते हैं। शहरी क्षेत्रों में अन्य भाषाओं के मुहावरे भी प्रयुक्त होने लगे हैं, पर लोकसाहित्य में लोक–मुहावरों का ही प्रयोग किया जाता है, जो दृष्टव्य हैं–

1- आइग लगागा – झगड़ा करना।

2- उपरे गुड़, भीतरे खुर – कपटी होना।

3- आंइखें धुरा झिटा – धोखा देना।

4- भेइरता करा – पिटाई करना आदि।

कुरमाली पहेलियाँ :–

पहेलियाँ को संस्कृत में प्रहेलिका कहा जाता है। जिसका अर्थ होता है– 'किसी कही हुई बात का भाव अपनी स्थिति में स्पष्ट न होना।' मानव प्रवृत्ति रहस्यात्मक होती है। जब मनुष्य यह चाहता है कि उसके कथन को सर्वसाधारण न समझ सके तो वह ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो जनसाधारण की समझ से परे होती है। यही पहेली का रूप धारण कर लेती है। मनुष्य की गोपनीय प्रवृत्ति ही पहेलियाँ की उत्पत्ति का कारण है।

पहेलियाँ की उत्पत्ति के संबंध में फ्रेजर महोदय ने कहा है– 'पहेलियाँ की रचना अथवा उदय उस समय हुआ होगा, जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में किसी प्रकार की

अड़चन पड़ती होगी।''[7] समय के साथ ही पहेली का विस्तार होता गया और आगे चलकर लोक–जीवन में भी इसका उपयोग होने लगा। यह एक लौकिक परंपरा हो गई।

कुरमाली भाषा साहित्य में पहेली का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज में पहेलियाँ मनोरंजन के लिए कही जाती है। रात्रि में भोजनोपरांत कुम्बा में सोते समय या रात्रि धधौरा के बगल में बैठकर कहा और सुना जाता है। मनोरंजन के साथ–साथ विवाह के अनुष्ठानों में बुद्धि परीक्षण के रूप में पहेली का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के रूप में कुछ पहेलियाँ दृष्टव्य हैं–

1- गिरल पइना बिछब केसे – सांप।

2- राइते गरू गठाला, दिने गरू नाइ – तारा।

3- डुबि–डुबि जाय, पुइडे चारा खाय – सूइ।

कुरमाली खेल गीत या बाल गीत :–

खेल गीत उन गीतों को कहते हैं,जिसका प्रयोग बच्चे आपस में खेलते समय करते हैं। बड़े, बच्चों को गोद में लेकर या पेट पर अथवा घुटनों पर बैठाकर खेलाते हैं, तो वे गीत भी सुनाते हैं। ये बड़ों द्वारा प्रयुक्त खेल–गीत है। बड़े इन गीतों से बच्चों का मनोरंजन कराते हैं। इन गीतों से खेल गतिमय हो जाता है और बच्चा आनंद की अनुभूति करता है।

किसी देश के खेल–कूद के अध्ययन से वहाँ के निवासियों के स्वभाव, साहस और शक्ति का पता चलता है। जिस जाति के खेल जितने साहसपूर्ण और वीरता से युक्त होंगे, वह जाति उतनी ही साहसी समझी जाती है। खेल–कूद को लोक–संस्कृति का प्रधान अंग होता है। कुरमाली के खेलगीत दृष्टव्य हैं–

इचिंग मिचिंग बेइल पात
आनगाञ आहेइ नीम गाछ
नीम झर–झर करेला
राइमुनि कर झुमका बाजे झुम तेता
खांखड़ा लेबे न कुचिया।''[8]

संदर्भ ग्रंथों की सूची :–

1- वर्मा महादेवी, विवेचनात्मक गीत, पृ.सं.–141

2- परमार डॉ. श्याम, भारतीय लोक साहित्य, पृ.सं.–53

3- महतो डॉ. परमेश्वरी प्रसाद, कुरमाली के बांदना गीत एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.सं.–15

4- मिश्र डॉ. दुर्गा शंकर, साहित्यिक निबंध, पृ.सं.–252

5- डॉ. सत्येंद्र, लोकसाहित्य विज्ञान, पृ.सं.–462

6- डॉ. रहमतुल्लाह, लोक साहित्य में आमोद–प्रमोद, पृ.सं.–89

7- जे. जी. फ्रेजर, द गोल्डन बाउ, नवाँ भाग, पृ.सं.–121

8- देवी माधुरी, (बेला राहे) मौखिक प्राप्त

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM